ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 8 | 30 जून से 6 जुलाई, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853117 सम्वत् 2073 आ. कृ.. 10

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून, 2016 को
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के द्वारा सुभाष स्टेडियम सोनीपत में

प्रान्तीय योग समारोह का भव्य आयोजन

21 जून, 2016 को योग दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा क्षेत्र के सांसद श्री रमेश कौशिक तथा अन्य विशेष अतिथि योगाभ्यास करते हुए

21 जून, 2016 को योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास करते हुए सोनीपत के क्षेत्रीय नागरिक महिला, पुरुष एवं बच्चे

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित विश्व योग दिवस को दुनिया के लगभग 160 देशों द्वारा 21 जून, 2016 को विशेष उत्सव के रूप में मनाया गया। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने चण्डीगढ़ में एक विशेष समारोह में सम्मिलित होकर विश्व योग दिवस की शोभा बढ़ाई। वहीं विश्व विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी ने दिल्ली के निकट फरीदाबाद में विशाल स्तर पर समारोह आयोजित कर योग को प्रचारित एवं प्रसारित किया। भारत के विभिन्न प्रदेशों ने तथा गांव से लेकर शहर एवं विभिन्न संस्थाओं के प्रांगणों में योग समारोह बड़े उत्सव के साथ आयोजित किये गये।

आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा सोनीपत में आयोजित प्रान्तीय योग समारोह में भाग लेकर अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ाई। इस प्रान्तीय योग समारोह में स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त सोनीपत लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री रमेश कौशिक मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त सोनीपत के भाजपा नेता एवं चुनाव प्रकोष्ठ के प्रान्तीय प्रभारी श्री ललित बतरा, सरदार विक्रम सिंह, श्री विनोद लायल, सरदार ज्ञान सिंह, श्री जयसिंह ठेकेदार, श्री कर्नल आर. के. सिंह, श्री टीकाराम मित्तल प्रधान अग्रवाल सभा, प्रो. ओम प्रकाश गर्ग, मास्टर भगवान सिंह, श्री नरेश चन्द्र शर्मा, श्री मनोहर लाल चावला, श्री बलराम आर्य आदि ने मंच पर सामूहिक योगासनों में भाग लेकर कार्यक्रम की गरिमा को चार–चांद लगा दिये। इस पूरे योग समारोह का आयोजन कर्मठ निष्ठावान एवं अथक परिश्रमी परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री प्रिं. आजाद सिंह बांगड़ ने बड़ी कुशलता के साथ किया। आसन एवं स्तूपों का अभ्यास परिषद् के प्रतिष्ठित योगाचार्य श्री प्रवीण आर्य ने कराया। आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने सर्वश्री अंकित बांगड़, अमित आर्य, अजयपाल आर्य, रामबीर आर्य, श्रीपाल आर्य, सहसरपाल आर्य, व्यायामाचार्य शिवकुमार आर्य, सोनू आर्य, कर्मपाल आर्य, अंकित आर्य आदि के सहयोग से समुचित रूप से सम्भाली।

सांसद श्री रमेश कौशिक को महर्षि दयानन्द का चित्र भेंट करते हुए स्वामी आर्यवेश जी व अन्य अधिकारीगण

समारोह में हरियाणा के विभिन्न जिलों से लगभग एक हजार युवाओं

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

माता-पिता, आचार्य द्वारा बालकों का निर्माण

– लज्जारानी गोयल 'साहित्य रत्न'

धन्य है वह बालक इस संसार में जिसको माता-पिता व गुरु तीनों ही उत्तम शिक्षक मिल जाते हैं। शतपथ ब्राह्मण का यह वचन 'मातृमान, पितृमान, आचार्यमान पुरुषों वेद अर्थात् बालक के जीवन रूपी महल के निर्माण में माता-पिता व गुरु तीनों ही चतुर शिल्पकारों की आवश्यकता है। इसमें गुरु से सौ गुना प्रभाव माता का बालक पर होता है। तभी तो कहते हैं कि 'माता निर्माता भवति' प्रथम गुरु के नाते माता ही सच्ची निर्माता है।

माता के द्वारा बालक का निर्माण गर्भ के पूर्व से प्रारम्भ हो जाता है। इसीलिए योगीराज श्रीकृष्ण व रुक्मिणी ने बारह वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर प्रद्युम्न नामक बालक को जन्म दिया था। गर्भस्थिति में व प्रसव के पश्चात् माता का प्रभाव अत्यधिक रहता है। अभिमन्यु गर्भगत् संस्कारों का ही परिणाम था। चक्रव्यूह में प्रवेश करने की विद्या तो उसने गर्भ से सुन ली थी परन्तु बाहर निकलने की बात नहीं सुनी थी परिणाम स्वरूप अभिमन्यु चक्रव्यूह नहीं तोड़ सका। जैसे एक कुम्हार कच्ची मिट्टी पर रेखाएं अंकित कर अपनी तूलिका से रंग भर कर चित्रित करता है मनचाहा चित्र बना लेता है, ठीक उसी प्रकार माता बालक को जैसा चाहे बना सकती है वह चाहे तो उसमें अच्छे संस्कार भर कर मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगीराज श्रीकृष्ण बना दे वह चाहे तो वीर शिवा व झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बना दे। बालक को उठते, बैठते, चलाते, बुलाते खिलौनों से खिलाते, अच्छी अच्छी कहानियों व गीत गुनगुनाते, सोते ही सोते लोरियां सुनाते बालक के हृदय पटल पर छाए रहते हैं। जीजाबाई ने शिवाजी को पालने में झुलाते-झुलाते ही उनके रग-रग में वीरता के स्वर भर दिए और वह माता के आदर्श संस्कारों का ही परिणाम था कि एक बार उनका सेनापति डोली में बिठाकर एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री को ले आया। सेनापति समझा कि इसे पाकर शिवाजी बहुत प्रसन्न होंगे लेकिन शिवाजी की मां ने तो प्रत्येक नारी में मां का स्वरूप देखने की शिक्षा दी थी। जैसे ही सुन्दरी डोली से उतरी, शिवाजी ने मातृवत पर दारेषु का आदर्श प्रस्तुत करके सुन्दरी को प्रणाम किया और कहा कि 'माता मैं काश! तुम्हारे जैसा ही सुन्दर होता' यह कहकर सेनापति को आज्ञा दी कि 'इनको अपने घर पहुंचा कर आओ। यह है माता के द्वारा दिए गए अच्छे संस्कारों का प्रभाव। माता के द्वारा तो आंतरिक विकास होता है किन्तु पिता के द्वारा सामाजिक विकास होता है वेदों में कहा है 'सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम' अर्थात् इस पिता का पुत्र सभ्य हो, सभा समाज में बैठने व यथोचित व्यवहार करने वाले हो। लेकिन आजकल पिता अपने यांत्रिक जीवन में से थोड़ा भी समय बालक को व्यवहारिक ज्ञान देने में व्यय नहीं करता। जब बेचारा बालक जगत की विविधता को देखकर भांति-भांति के प्रश्न पूछता है तो उसे डांट दिया जाता है इस प्रकार उसकी जिज्ञासा प्रवृत्ति कुंठित हो जाती है। पश्चिमी सभ्यता ने ऐसा रंग जमाया है कि बालक को कहीं सभा, सोसायटी व पार्टी में ले जाना भी अभिभावक पसंद नहीं करते। बालक का मन अत्यन्त कोमल होता है बचपन में माता-पिता उस पर उसी प्रकार प्रभाव डाल सकते हैं जिस प्रकार एक फोटोग्राफी की प्लेट पर चित्र अंकित हो जाता है।

बालक अनुकरणीय होता है घर में दिन रात अच्छा या बुरा जो कुछ वह देखता है उसी का अप्रत्यक्ष रूप में उस पर प्रभाव पड़ता है। माता-पिता को हर समय सचेत रहना चाहिए। मां बाप को बालकों के सामने आपस में झगड़ना नहीं चाहिए। माता-पिता समझते हैं कि बच्चा अनजान है लेकिन उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं रहता कि बालकों की अनुकरण करने की प्रवृत्ति और ग्रहणशीलता बड़ों से कहीं अधिक होती है। एक बार की बात है कि एक पिता ने हंसी-हंसी में हजामत बनाते समय ब्लेड बालक की नाक पर रख कर कहा कि 'आ तेरी नाक काट दूं' दूसरे दिन मां ने क्या देखा कि नन्हा बालक कमरे में बैठकर अपने पिता के हजामत बॉक्स में से ब्लेड निकाल कर सचमुच अपनी नाक काटने के प्रयास में ही था माँ ने आवाज लगाई नहीं- नहीं ऐसा न करो। इस करतूत को पिता से कहा तब पता चला कि पिता की हंसी-हंसी में कही हुई बात का बालक ने किस प्रकार अनुकरण किया। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि हमारे बालक वही करते हैं जो कुछ हम करते हैं। बहुत से माता-पिता बालक को लाड़ प्यार में आकर उल्लू, गधा, बदमाश आदि शब्दों से सम्बोधित करते हैं और कभी कभी बालक के हाथ से अपने मुंह पर थप्पड़ लगवा कर बड़े प्रसन्न होते हैं। जब मां बाप उसे बेईमान कहने में संकोच नहीं करते तो वह बेईमान बनने में क्यों शरमायेगा।

आज देश में धर्म निरपेक्ष का सिद्धान्त लेकर बालकों को धार्मिक व भौतिक शिक्षा से सर्वथा वंचित किया जा रहा है और इसी लिए देश में जातीयता, प्रांतीयता, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार आदि का सर्वत्र बोलवाला है। विश्व बंधुत्व की भावना समाप्त हो गई है। 'वसुधैव कुटुंबकम' अर्थात सारा संसार ही एक परिवार है। हमारी प्राचीन संस्कृति से हम बहुत दूर जा रहे हैं। आज हमारे देश में भांति-भांति की योजनाएं बनती हैं लेकिन बालक जो कल देश की नैया खवैया है उसकी अर्थात् बालक की निर्माण योजना की ओर किसी का ध्यान नहीं है। हम सबको यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि कोई भी योजना तब तक उन्नत नहीं होगी जब तक बालकों की समुचित विकास योजना नहीं बनेगी।

आजकल पश्चिमी सभ्यता की आंधी ने धनी मानी महिलाओं को बच्चों को आया को सौंप कर क्लबों में जाने, ताश खेलने आदि की आदतों ने घेर लिया है। ये अशिक्षित आयायें बालकों को बुरी आदतें ही नहीं कुचेष्टाएं भी सिखाती हैं इस प्रकार बालकों पर उनके कुसंस्कार पड़ते हैं। मां बाप के साथ बच्चों के न जाने से संगतिकरण के बिना सामाजिक एवं व्यवहारिक ज्ञान से शून्य रहते हैं। बालकों में माता-पिता के साथ रहने से कुछ गुण तो स्वयं प्रस्फुटित हो जाते हैं। लेकिन किसी किसी में प्रवृत्ति भिन्न भी हो जाती है। आज के युग में टी. वी. का इतना बोलवाला है कि उनके प्रोग्रामों में अश्लीलता की हद होती है। आज के बालक टी. वी. के प्रोग्रामों की नकल करते हैं और उनकी बोलचाल वेशभूषा का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

अधिकतर मां बाप चिंतित हैं कि बालकों को किस प्रकार अश्लील गानों व फिल्मों से रोका जाए। एक समस्या और है कि डॉक्टर का बाप अपने बेटे बेटी को डॉक्टर ही बनाना चाहते हैं लेकिन बालकों की रुचि के अनुसार ही उन्हें बनने देना चाहिए।

माता पिता के द्वारा तो बालक का आंतरिक व सामाजिक निर्माण होता है लेकिन आचार्य या गुरु अपने उपदेश द्वारा बौद्धिक निर्माण करता है। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में तो बालक को गुरु को सौंप दिया जाता था केवल किताबी पढ़ाई ही नहीं सर्वगुण सम्पन्न बालक को बनाना आचार्य का कर्त्तव्य होता था। आजकल आचार्य के प्रति सम्मान की भावना नहीं रही। धर्मशिक्षा स्कूलों में नहीं पढ़ाई जाती जिससे बालक, अनुशासनहीन व चरित्रहीन बनते जा रहे हैं। आजकल आचार्य कुछ कहें तो न उनकी कुशल न उनकी कुर्सी की। गुरुजी के सामने कक्षा में नकल की जा रही है और गुरुजी को चुपचाप आंख फेर लेना पड़ता है क्योंकि कुछ भी कहा तो बीच चौराहे पर उनकी खबर ली जायेगी। बेचारे गुरु को जान से हाथ धोना पड़ेगा। यह है हमारी आजकल की शिक्षा का कुप्रभाव। एक ओर विद्यार्थी का ये हाल है तो दूसरी ओर गुरुजी भी अपने कर्त्तव्यों को भूलते जा रहे हैं। कक्षा में इधर उधर की बातें सुना कर समय की इतिश्री करते हैं।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि बालकों का शारीरिक मानसिक व बौद्धिक विकास माता-पिता व आचार्य पर निर्भर है। अगर ये तीनों ही समझदारी से काम लें तो बालकों में धार्मिकता, दयालुता, आत्मविश्वास, सहिष्णुता, भाईचारे की भावना आदि मानवीय गुणों का विकास होगा। आज देश में धर्म निरपेक्ष का सिद्धान्त लेकर बालकों को धार्मिक व भौतिक शिक्षा से सर्वथा वंचित किया जा रहा है और इसी लिए देश में जातीयता, प्रांतीयता, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार आदि का सर्वत्र बोलवाला है। विश्व बंधुत्व की भावना समाप्त हो गई है। 'वसुधैव कुटुंबकम' अर्थात सारा संसार ही एक परिवार है। हमारी प्राचीन संस्कृति से हम बहुत दूर जा रहे हैं। आज हमारे देश में भांति-भांति की योजनाएं बनती हैं लेकिन बालक जो कल देश की नैया खवैया है उसकी अर्थात् बालक की निर्माण योजना की ओर किसी का ध्यान नहीं है। हम सबको यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि कोई भी योजना तब तक उन्नत नहीं होगी जब तक बालकों की समुचित विकास योजना नहीं बनेगी। किसी विद्वान का कथन कितना सत्य है कि बचपन ही पिता है बालक का। जो कुछ छः वर्ष की उम्र तक सीख लिया जाता है सारी उम्र वह बातें काम में आती हैं और उस बचपन की बेलि पर सद्गुणों के पुष्प खिलाने में माता-पिता व आचार्य तीनों ही भागीदार हैं। इन तीनों के अतिरिक्त राज्य भी अपने कर्त्तव्य से मुंह नहीं मोड़ सकता। इसलिए बालकों की उन्नति के लिए समुचित विकास की योजनाएं बनायें। अश्लील फिल्म, अश्लील विज्ञापन पर रोक लगाकर बालकों में चरित्र निर्माण में सहायक बनें।

उपनिषद् परिचय व उनका प्रभाव

– श्री जसवन्त राय गुगलानी

उपनिषद् शब्द का अर्थ : उप का अर्थ 'समीप' तथा निषद् का अर्थ बैठता है। ब्रह्म ज्ञानियों के समीप बैठकर अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करना। सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय का ज्ञान, परम सत्ता क्या है?पर और अपर ब्रह्म क्या है?ब्रह्म की प्राप्ति कैसे हो सकती है?शरीर-आत्मा, आत्मा-परमात्मा आदि के सम्बन्धों का ज्ञान इन उपनिषदों में वर्णित है। उपनिषदों में आख्यायिकों के माध्यम से विवेचन ने इनको रोचक बना दिया।

उपनिषद् कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं हैं अपितु वेद के संदेशों को सरल भाषा में ब्रह्मवेत्ताओं ने प्रस्तुत किया है। जैसे महाभारत के भीष्म पर्व के 22वें अध्याय से 42वें अध्याय तक के 18 (अठारह) अध्यायों को गीता के नाम से जाना जाता है वैसे ही उपनिषद् भी वेद, वेद शाखाओं व ब्राह्मण ग्रंथों के विशेष अंशों को लेकर लिखे गये हैं। पौराणिक जगत् में इन्हें 'वेदान्त' नाम से भी जाना जाता है। ये वस्तुत: वेद संदेश ही तो हैं। पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उदाहरण के रूप में कहते हैं जैसे गंगा नदी से निकली नहर में भी जल तो गंगा का ही तो है।

उपनिषदों की संख्या - नये पुराने उपनिषदों की संख्या 200 से अधिक है। महर्षि दयानन्द ने ग्यारह उपनिषदों को प्रामाणिक माना है। स्वामी शंकराचार्य ने इनमें से दस का भाष्य किया है। ये प्रामाणिक उपनिषद् हैं - (1) ईशोपनिषद् (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) प्रश्नोपनिषद् (5) मुण्डकोपनिषद् (6) माण्डूक्योपनिषद् (7) ऐतरेय उपनिषद् (8) तैत्तिरीयोपनिषद् (9) छान्दोग्योपनिषद् (10) वृहदारण्यकोपनिषद् (11) श्वेताश्वतरोपनिषद्।

उपनिषद् की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि अन्य मत-मतान्तर भी अपने-अपने आध्यात्मिक ग्रन्थों को उपनिषद् नाम देने लगे। यहाँ तक कि अल्लोपनिषद् भी रचा गया।

उपनिषदों के विषय

ईशोपनिषद् - इस उपनिषद् में ईश्वर व जगत् के स्वरूप का वर्णन किया गया है। ईश्वर की सर्व- व्यापकता व नित्यता तथा जगत की अनित्यता, गतिशीलता तथा जड़ता के बारे में व्याख्या की गई है। इसमें यह भी समझाया गया है कि संसार के सभी पदार्थ ईश्वर के हैं, हमारे नहीं। परमात्मा ने सभी पदार्थ मनुष्य के भोग के लिए ही प्रदान किये हैं। यह धन मनुष्य के पास ईश्वर की धरोहर है। मनुष्य लालच न करें। वह ईश्वर प्रदत्त इस धन का भोग त्याग भाव से करें।

केनोपनिषद् - इस उपनिषद् में परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता का वर्णन आख्यायिकाओं द्वारा किया गया है। उपनिषद्कार ने आत्मा को नेत्रों का नेत्र तथा श्रोत्र का भी श्रोत्र बताया है। यह आत्मा चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता और न ही उसे वाणी से प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर इंद्रियों का विषय नहीं है और न ही आत्मा इंद्रियों का विषय है। उपनिषद्कार ब्रह्म के विषय में लिखता है कि ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान किसी को नहीं हो सकता। इस उपनिषद् में ब्रह्म प्राप्ति के साधन तप और दम को बताया है।

कठोपनिषद् - इस उपनिषद् में यम व नचिकेता के संवाद को प्रस्तुत किया गया है। यमाचार्य, नचिकेता को तीन वर मांगने के लिए कहता है अपने तीसरे वर में नचिकेता आचार्य से मनुष्य के मरने के बाद की स्थिति के बारे में जानना चाहता है। वह पूछता है कि मरता शरीर है या आत्मा। मरने के उपरान्त आत्मा कहाँ जाता है। प्रथम तो आचार्य उसकी परीक्षा लेने के हेतु उसे कोई और प्रश्न पूछने को कहता है। उसे विभिन्न प्रलोभन देकर इस प्रश्न को न पूछने का आग्रह करता है। नचिकेता के न मानने पर तथा उसकी दृढ़ता को दृष्टिगत करते हुए शरीर की नश्वरता तथा आत्मा की अमरता की बात समझाता है। यमाचार्य उसको श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग का अन्तर बताता है। ईश्वर के निज नाम ओ३म् की महत्ता तथा उसके जप से क्या लाभ हो सकता है का वर्णन किया गया है।

प्रश्नोपनिषद् - इस उपनिषद् में 6 जिज्ञासु (1) सुकेश (2) सत्यकाम (3) गार्ग्य (4) कौशल्य (5) वैदर्भी (6) कबन्धी, आचार्य पिप्पलाद से ब्रह्म विद्या के बारे में प्रश्न करते हैं।

इन्होंने जो प्रश्न आचार्य के सम्मुख रखे वे इस प्रकार हैं - यह सारा संसार किससे उत्पन्न हुआ, कितने देवता इस सृष्टि को धारण कर रहे हैं?कौन सा देव मुख्य है?प्राण कहां से और किससे उत्पन्न होता?प्राणों के नाम और स्थान?प्राणों के कार्य क्या हैं?कौन सोता है, कौन जागरित रहता, सुषुप्ति अवस्था क्या है?सुख किसको होता है?अपर ब्रह्म और पर ब्रह्म क्या है?ओंकार के ध्यान से क्या लाभ है?सोलहकला युक्त कौन है?वे सोलह कलाएं कौन सी हैं?

मुण्डकोपनिषद् - समस्त अविद्याओं-अन्धविश्वासों आदि को मूण्डने, समाप्त करने के कारण इस उपनिषद् को मुण्डकोपनिषद् कहते हैं। इसमें पर विद्या, अपर विद्या क्या है?प्रकृति व ब्रह्म का वर्णन, ब्रह्म प्राप्ति से लाभ, त्रैतवाद, ब्रह्म प्राप्तकर्ता के लक्षण आदि विषयों का सुन्दर वर्णन इस उपनिषद् में किया गया है।

माण्डूक्योपनिषद् - इसमें केवल बारह श्लोक हैं। इसमें ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् की व्याख्या की गई है। आत्मा की चतुर्विध अवस्था का वर्णन इसमें किया गया है। तीन अवस्थायें एवं तीन शरीर-स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर तथा कारण शरीर, ब्रह्म की तीन अवस्थाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है, श्री गौड़पादाचार्य ने इस पर कारिकायें (श्लोक) लिखी हैं जिससे यह उपनिषद् लोकप्रिय हो गया है।

ऐतरेयोपनिषद् - इसमें ब्रह्म विद्या का वर्णन है। सृष्टि के निर्माण में पाँच लोकों का निर्माण का वर्णन। परमात्मा द्वारा सृष्टि के निर्माण के प्रयोजन की व्याख्या। संसार के पदार्थ तथा उनका उपभोग करने वाला कौन है तथा वह कैसा होना चाहिए। ब्रह्म और ब्रह्माण्ड की चर्चा। मनुष्य शरीर की महत्ता का वर्णन। जड़ और चेतन की रचना एवं उनमें भेद। इस उपनिषद् में अन्न के महत्त्व को तथा भूख और प्यास के प्रभाव को दर्शाया गया है। भूख और प्यास के स्थान, अपान वायु के कर्त्तव्य, शुक्र-वीर्य के महत्त्व की, संस्कारों के महत्त्व की तथा पुनर्जन्म आदि की शंकाओं का उपनिषद्कार ने समाधान किया है।

तैत्तरीयोपनिषद् - इस उपनिषद् में 3 भाग हैं। प्रत्येक भाग को वल्ली कहा गया है। ये 3 वल्लियाँ है। - (1) शिक्षा वल्ली, (2) ब्रह्मानन्द वल्ली, (3) भृगुवल्ली।

शिक्षा वल्ली - इसमें शिक्षा के बारे में वर्णन है। वर्ण एवं स्वर ज्ञान, मात्रा ज्ञान, स्वाध्याय और प्रवचन पर बल, ऋत और सत्य के अर्थ तथा इनमें भेद, तप, दम व शम का महत्त्व, माता-पिता व गुरु भक्ति की व्याख्या सुन्दर ढंग से की है।

ब्रह्मानन्द वल्ली - गुरु शिष्य की प्रतिज्ञा, ब्रह्म के स्वरूप, सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय कैसे होती है, पंचकोश तथा उनका उद्देश्य - (1) अन्नमय कोष (2) प्राणमय कोष (3) मनोमय कोष (4) विज्ञानमय कोष (5) आनन्दमय कोष की सुन्दर व्याख्या की गई है।

उपनिषद् कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं हैं अपितु वेद के संदेशों को सरल भाषा में ब्रह्मवेत्ताओं ने प्रस्तुत किया है। जैसे महाभारत के भीष्म पर्व के 22वें अध्याय से 42वें अध्याय तक के 18 (अठारह) अध्यायों को गीता के नाम से जाना जाता है वैसे ही उपनिषद् भी वेद, वेद शाखाओं व ब्राह्मण ग्रंथों के विशेष अंशों को लेकर लिखे गये हैं। पौराणिक जगत् में इन्हें 'वेदान्त' नाम से भी जाना जाता है। ये वस्तुत: वेद संदेश ही तो हैं। पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय जी उदाहरण के रूप में कहते हैं जैसे गंगा नदी से निकली नहर में भी जल तो गंगा का ही तो है।

भृगु वल्ली - वरुण के पुत्र भृगु के अपने पिता से इन विषयों पर प्रश्न किये गये - भौतिकवाद व अध्यात्मवाद, प्रेय मार्ग व श्रेय मार्ग जैसे विषयों पर पिता के समाधान के माध्यम से उपनिषद्कार ने प्रस्तुत किये हैं।

छान्दोग्योपनिषद् - सामवेद के ब्राह्मण ग्रन्थ के प्रारम्भिक दो अध्यायों को छोड़कर शेष भाग छान्दोग्योपनिषद् है। इसमें अधोलिखित विषयों पर सारपूर्ण चर्चा हैं :-

ओ३म् की महत्ता, उद्गीथ का अर्थ एवं उपासना, प्राणों का महत्त्व, देवों और असुरों में भेद, सामगान के प्राण, धर्म के तीन आधार यज्ञ अध्ययन व दान पर तथा वसु आदित्य व रूद्र की चर्चा। संवर्ग विद्या क्या है?सत्यकाम जाबाल की कथा सत्य का प्रभाव, अश्वपति की अपने राज्य में सद्गुणों की चर्चा श्वेतकेतु की कक्षा में सत् और असत् के भेद दर्शाना, नारद द्वारा सन्त कुमार से आध्यात्म ज्ञान प्राप्ति हेतु जाने का आख्यान, देवताओं के राजा इन्द्र तथा असुरों के प्रतिनिधि विरोचन द्वारा प्रजापति से आत्मा के स्वरूप को जानना आदि अनेकों अध्यात्म के विषयों पर विचार किया गया है।

बृहदारण्यक - शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 6 अध्यायों को बृहदारण्यक कहते हैं। इस उपनिषद् में गोमेध, अश्वमेध व नरमेध यज्ञों में इन शब्दों के अर्थों के अनर्थों को उजागर किया गया है। ब्रह्म के मूर्त व अमूर्त रूप का वर्णन किया गया है। ऋषि याज्ञवल्क्य से प्रश्नोत्तर। गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच प्रश्नोत्तर। जनक और याज्ञवल्क्य का संवाद। याज्ञवल्क्य द्वारा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीय अवस्था का वर्णन।

श्वेताश्वतर उपनिषद् - इसकी रचना पद्यों में हुई है। इसमें 6 अध्याय तथा 113 पद्य हैं। इसके अनेक पद्य अन्य ग्रन्थों में भी पाये जाते हैं। इस उपनिषद् में चर्चित विषय हैं - सृष्टि का कारण, प्रकृति-जीव-ब्रह्म, प्राणायाम के स्थान व लाभ, अज-अजा व वृक्ष तथा दो पक्षियों की आख्यायिकाएं, त्रैतवाद, दु:ख का अन्त आदि।

उपनिषदों के भाष्य एवं अनुवाद - दारा शिकोह जो कि मुगल बादशाह शाहजहां का बेटा तथा औरंगजेब के भाई ने 52 उपनिषदों का अनुवाद सन् 1657 से 1674 तक अर्थात् 18 वर्ष में फारसी में किया। इस अनुवाद को सिर्रे-अकबर के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है महान् रहस्य।

सन् 1757 में यानी 80 वर्ष से भी अधिक समय के बाद एक फ्रांसीसी सज्जन जरियाल ने फारसी के अनुवाद को देखा और उस पर मोहित हो गया। उन्होंने इस अनुवाद किये उपनिषदों को फ्रांसीसी भाषा में अनूदित किया।

योरोपियन विद्वान् ड्यूपोरो ने उपनिषदों का अनुवाद जर्मन तथा लैटिन-भाषा में किया। मैक्समूलर ने उपनिषदों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया जिसका नाम उसने 'सेक्रेड बुक्स ऑफ दि ईस्ट' नाम से उसने 12 उपनिषदों का अनुवाद किया। यह अनुवाद उसने 5 वर्षों में किया।

सन् 1816 से 1819 के बीच राजा राम मोहन राय ने भी अंग्रेजी में इनका अनुवाद किया।

उपनिषदों की लोकप्रियता बढ़ती गयी और इनका अनुवाद भिन्न-भिन्न भाषाओं में होता गया। इनकी लोकप्रियता के परिणाम स्वरूप अन्य मत वाले भी अपनी अध्यात्म की पुस्तकों का नाम उपनिषद् रखने लग गये। यहाँ तक कि अल्लोपनिषद् की रचना इस्लामिक बन्धुओं द्वारा कर दी गई।

उपनिषदों का प्रभाव - दारा शिकोह ने लिखा उसने अध्यात्म की बहुत सी पुस्तकें पढ़ी, कुरान, तौरेत, अंजलि, जबर आदि पढ़े परन्तु मन को शान्ति प्राप्त नहीं हुई।

दारा शिकोह की भतीजी, शहंशाह औरंगजेब की पुत्री जिसका नाम जेबुन्निसा था, अपने चच्चा दारा शिकोह के पास बैठकर उपनिषदों के उपदेश सुना करती थी। जरा देखिए कि इन उपदेशों का असर उसके मन पर कितना पड़ा। एक चीन के व्यापारी ने औरंगजेब को एक दर्पण भेंट किया। उसने वह दर्पण अपनी पुत्री जेबुन्निसा को भेज दिया। उस दर्पण में अपना मुख देखकरशृंगार किया करती थी। एक दिन शहजादी ने अपनी दासी को वह आईना लाने को कहा। दासी जब दर्पण ला रही थी, वह दर्पण उसके हाथ से गिर गया और टूट गया। वह घबरा गई कि अब तो शहजादी बहुत दण्ड देगी। देर होती देख शहजादी ने दासी को पुन: दर्पण शीघ्र ही लाने का हुक्म दिया। दासी डरती-डरती शहजादी के निकट आई और बोली - 'अज कजा आईनाये चीनी शिकस्त' अर्थात् मेरी शामत आई है क्योंकि मेरे हाथ से चीनी दर्पण टूट गया। इस पर शहजादी क्रोधित न होकर, मुस्कराते हुए बोली - 'अज कजा आईनाये चीनी शिकस्त, खूब शुद सामाने खुदबीनी शिकस्त।' अर्थात् चीनी शीशा टूट गया, अच्छा हुआ मेरे अभिमान का सामान समाप्त हो गया। यह था उपनिषदों के उपदेश का प्रभाव।

दारा शिकोह उपनिषदों से इतना प्रभावित हुआ कि उसके मतावलम्बी उसे काफिर कहने लगे। उपनिषदों के अध्यात्म ज्ञान के मोह में उसे शाही तख्त और अपनी जान तक गंवानी पड़ी।

जर्मनी के विद्वान् शौपनहार ने लिखा, 'उपनिषदों से मेरी आत्मा को शान्ति मिली है और मरने के पश्चात् भी इन्हीं से शान्ति मिलेगी।

प्रोफेसर मैक्समूलर लिखते हैं - उपनिषदों के ज्ञान के फलस्वरूप मेरे जीवन में बहुत सुधार हुआ है। उपनिषद् महान् बुद्धि वालों का फल है। हमारा ईसाई मत इसके सामने जड़ नहीं पकड़ सकता।

स्वीडन के विद्वान पाल ड्यूसन का मत है कि उपनिषदों के ज्ञान से प्रतिक्षण जीवन में ऐसी शान्ति मिलती है जैसी और कहीं पर उपलब्ध नहीं।

मि. ह्यूम ने अपनी पुस्तक Dogmas of Buddhism में लिखा है कि उन्होंने बड़े-बड़े दार्शनिकों अरस्तु, अफलातून, सुक्रात, प्लेटो आदि के ग्रन्थों को पढ़ा है, पर जो विद्या एवं शान्ति उपनिषदों से प्राप्त हुई है वह अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं।

श्री जी. आर्क ने अपनी पुस्तक Is God Knowable में लिखा है कि मनुष्य की मानसिक, आत्मिक, सामाजिक आवश्यकताएं कैसे पूर्ण होती है का सुन्दर विवरण उपनिषदों में दिया गया है।

अन्तत: मैं पाठक वृन्द से साग्रह अनुरोध करूँगा कि वैदिक साहित्य का अध्ययन करके अपनी सभी समस्याओं का निराकरण करें।

- म. नं.-91/4, अर्बन एस्टेट, गुड़गांव-122001
(हरियाणा)
मो.:-9999667647

पृष्ठ–1 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून, 2016 को .....

ने भाग लिया। दलबल के साथ युवकों एवं युवतियों को कार्यक्रम में आने की प्रेरणा बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या रोहतक, अनिल आर्य हिसार, मास्टर हरपाल सिंह भिवानी, सत्यवीर आर्य कैथल, सज्जन सिंह राठी व डॉ. राजपाल आर्य जीन्द, रामबीर आर्य झज्जर तथा अन्य प्रमुख साथियों ने विशेष भूमिका निभाई। इस पूरे कार्यक्रम के लिए जन–धन जुटाने में सर्वश्री प्रिं. आजाद सिंह, प्रो. ओम प्रकाश गर्ग, मास्टर भगवान सिंह, राजेन्द्र सिंह चहल, नरेश शर्मा एवं ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य तथा जीतेन्द्र बांगड़ आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को टी–शर्ट एवं फल बांटे गये।

इस अवसर पर अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद रमेश कौशिक ने स्वामी आर्यवेश जी तथा पूरे आर्य समाज की कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए प्रशस्ति की। उन्होंने आश्वासन दिया कि भविष्य में जब भी उन्हें लोगों की भलाई के किसी कार्य के लिए आर्य समाज द्वारा याद किया जायेगा तो वे उसमें अपना पूरा सहयोग देंगे। श्री कौशिक ने योग को प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि निरोग रहने के लिए योग करना अत्यन्त आवश्यक है। विशिष्ट अतिथि श्री ललित बतरा ने योग को विश्व स्तर पर मान्यता दिलाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की विशेष प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही योग एवं योग की विविध क्रियाओं के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। उन्होंने सोनीपत में आयोजित योग समारोह की सफलता के लिए आयोजकों का हृदय से आभार व्यक्त किया। समारोह की विशेषता यह रही कि इसमें हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई आदि विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और सभी ने योग को संसार के प्रत्येक मनुष्य के लिए उपयोगी बताया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने योग को आध्यात्मिक उन्नति का एक वैज्ञानिक प्रयोग बताया। उन्होंने कहा कि आसन एवं प्राणायाम वास्तव में योग के साधन हैं और यम–नियम प्रत्येक व्यक्ति के आचरण एवं व्यवहार में नैतिक मूल्यों को प्रस्तुत करते हैं। अतः यह समझना आवश्यक है कि योग को किसी धर्म अथवा किसी देश विशेष के साथ जोड़कर न देखा जाये। योग एक सार्वभौम विद्या है जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करने की भावना), ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह तथा शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान आदि को आचरण में उतारकर अध्यात्म की ऊँचाईयों को छूआ जा सकता है।

स्वामी आर्यवेश जी ने आह्वान किया कि दुनिया में मनाये जाने वाले विविध पर्वों, त्यौहारों तथा मेलों की भांति योग दिवस को भी उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए। योग पूरे विश्व में सौहार्द, सद्भाव, शांति, सहयोग एवं प्रेम पैदा करने में सक्षम है और इसके द्वारा पूरे विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से एक परिवार बनाया जा सकता है।

प्रिं. आजाद सिंह बांगड़ ने कार्यक्रम की सफलता के लिए विशेष सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

श्री अतर सिंह स्नेही जी की 'संघर्षगाथा' पुस्तक का विमोचन समारोह 20 जून, 2016 को सर्वोदय भवन हिसार में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से सम्पन्न

अपने जीवन का अधिकतम भाग सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध विशेष रूप से शराबखोरी तथा गौहत्या के विरुद्ध संघर्ष में जीवन खपाने वाले वैदिक सिद्धान्तों को अपने जीवन में चरितार्थ कर समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने वाले, युवकों में चरित्र, ईमानदारी, देशभक्ति एवं ईश्वरभक्ति के संस्कार पैदा करके राष्ट्र के लिए विशेष योगदान देने वाले श्री अतर सिंह स्नेही वानप्रस्थ के जीवन की संघर्षपूर्ण घटनाओं को क्रमशः लिपिबद्ध कर आर्य समाज के प्रसिद्ध युवा विद्वान दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के प्राचार्य डॉ. प्रमोद आचार्य ने 'संघर्ष गाथा' नाम से सुन्दर पुस्तक की रचना करके अत्यधिक प्रशंसनीय कार्य किया। उक्त पुस्तक का विमोचन समारोह दिनांक 20 जून, 2016 को प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक सर्वोदय भवन हिसार में गुरुकुल धीरणवास के कुलपति बीतराग संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पुस्तक का विमोचन करने के लिए दिल्ली से मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उनके अतिरिक्त हरियाणा आर्य युवक परिषद् के प्रधान ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र, आचार्य रामस्वरूप शास्त्री, ब्र. दीप कुमार आर्य, कर्नल ओम प्रकाश आर्य, श्री सीताराम आर्य, श्री निहाल सिंह, श्री देवेन्द्र उप्पल, श्री सत्य प्रकाश मित्तल, प्रो. राजबीर सिंह आर्य, श्री शोभाचन्द्र आर्य, आचार्य राजमल सिंह, श्री नत्थू सिंह आर्य, श्री युद्धवीर सिंह आर्य, चौ. नन्दलाल, श्री फूलसिंह आर्य आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वेद प्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री रामकुमार आर्य मिगनीखेड़ा ने किया तथा पुस्तक के सम्बन्ध में सारांश के तौर पर संक्षिप्त विवरण पुस्तक के यशस्वी लेखक डॉ. प्रमोद आर्य ने प्रस्तुत किया। पुस्तक विमोचन करने के उपरान्त अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने वानप्रस्थी अतर सिंह स्नेही के जीवन की अनेक घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसा दृढ़ संकल्प, गहरी निष्ठा, समर्पण, त्याग एवं संघर्ष की उत्कट इच्छा बिरले लोगों में देखने को मिलती है जैसी महात्मा अतर सिंह स्नेही में रही है। स्वामी जी ने बताया कि अनेक दुर्गुण एवं दुर्व्यसनों से ग्रस्त श्री अतर सिंह जी ने अपना जीवन आर्य समाज के साथ जोड़कर कुन्दन बना लिया। उन्होंने शराबबन्दी के लिए जहाँ अनेक बार आन्दोलन किये वहीं उनके द्वारा की गई 180 दिन की भूखहड़ताल इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय बन गई।

स्वामी जी ने कहा कि अपने नौजवान बेटे की असामयिक मृत्यु के पहाड़ समान दुःख को झेलने वाले स्नेही जी आर्य समाज के कार्य से कभी पीछे नहीं हटे। उनके जीवन पर जितना कहा जाये उतना कम है। किन्तु आज वह एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी बन चुके हैं जिनसे भावी पीढ़ियाँ सदैव सिद्धान्त रक्षा एवं संघर्ष की प्रेरणा लेती रहेंगी। स्वामी सर्वदानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्नेही जी को चलता–फिरता आर्य समाज बताया।

कस्बा छपरौली जिला बागपत उत्तर प्रदेश में विशेष यज्ञ का आयोजन
सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ प्रभावशाली प्रवचन
श्री संजीव खोखर ने किया स्वामी जी का भव्य स्वागत

गत् 19 जून, रविवार को सायं 4 से 7 बजे तक जूनियर हाई स्कूल विद्यालय छपरौली में आयोजित एक विशेष यज्ञ के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। नगर पंचायत चेयरमैन श्री संजीव खोखर के प्रयत्न एवं आर्य समाज छपरौली के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सहयोग से आयोजित उक्त यज्ञ का आयोजन गाँव में गत दो महीने के दौरान कई युवकों की हुई असामयिक मृत्यु के कारण लोगों में फैली शोक एवं निराशा की भावना को दृष्टिगत रखकर किया गया था। पूर्व चेयरमैन नगर परिषद् श्री खिलारी सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सर्वश्री प्रधानाचार्य महक सिंह आर्य – पूर्व प्रधान आर्य समाज छपरौली, योगेन्द्र आर्य, पहलवान धर्मेन्द्र आर्य, कृष्णपाल खलीफा जी–प्रधान आर्य समाज छपरौली, धर्मवीर आर्य–पूर्व प्रधान आर्य समाज छपरौली, सुबेपाल आर्य–आर्य समाज छपरौली, नरेन्द्र आर्य–कोषाध्यक्ष आर्य समाज छपरौली, शिवकुमार–ग्राम सबगा, मा. राजपाल सिंह, राजसिंह आर्य–पूर्व प्रधान आर्य समाज छपरौली, अवनीश आर्य–रठोड़ा–उपप्रधान आर्य समाज छपरौली, चेयरमैन साहब की पूरी टीम तथा नगर के अन्य गणमान्य महानुभावों ने यज्ञ को सुन्दर तरीके से सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् लगभग डेढ़ घण्टे तक यज्ञ एवं यज्ञ द्वारा व्यक्ति, परिवार एवं समाज में वैचारिक क्रांति कर नई आशा का संचार करने हेतु सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपना ओजस्वी उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि जैसा आप सभी परिचित हैं छपरौली में पिछले दो–तीन महीने के दौरान कई युवकों की असामयिक मृत्यु से शोक एवं खौफ का वातावरण बना हुआ है। निःसंदेह यह हम सभी के लिए अत्यधिक कष्ट की बात है और हम शोक संतप्त उन सभी परिवारों के लिए अपनी ओर से सांत्वना एवं सहानुभूति प्रकट करते हैं। स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर की व्यवस्था के समक्ष मनुष्य का कोई चारा नहीं चलता उसे नतमस्तक होकर परमपिता परमात्मा के न्याय एवं व्यवस्था को हृदय से स्वीकार कर कर लेना चाहिए और अपने मन को हल्का करके अपने जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ विज्ञान पर विस्तार से विचार व्यक्त करते हुए बताया कि संसार का प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य यज्ञ कहलाता है और दूसरे शब्दों में इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि प्रत्येक वह कार्य जिसके द्वारा यज्ञ के समान प्राणीमात्र का लाभ होता हो वही यज्ञ है। यज्ञ परोपकार का नाम है। अतः हम सभी को अपने जीवन में यज्ञ करना आना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि मात्र यज्ञकुण्ड में समिधा सामग्री एवं घृत की आहुति देने से यज्ञ नहीं हो जाता बल्कि देवयज्ञ के माध्यम से पर्यावरण को शुद्ध करके समस्त प्राणियों को शुद्ध वायु उपलब्ध कराना ही यज्ञ का उद्देश्य है। स्वामी जी ने बताया कि देवयज्ञ की अग्नि यज्ञकुण्ड में प्रज्ज्वलित अग्नि के समान ही यज्ञ में यजमान के हृदय में संकल्प की अग्नि प्रज्ज्वलित होना आवश्यक है। यजमान की वास्तविक अग्नि उसका संकल्प होती है और वह उस संकल्पाग्नि के बल पर ही संसार में बड़े से बड़ा परोपकार एवं सेवा का कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है। स्वामी जी ने नगर परिषद् के युवा चेयरमैन श्री संजीव खोखर को कहा कि छपरौली कस्बे में होने वाले समस्त लोकोपयोगी कार्यों एवं लोगों की विभिन्न समस्याओं एवं कष्टों के निवारण हेतु किये जाने वाले प्रयत्नों के मुख्य यजमान वे स्वयं हैं और उन्हें कस्बे के प्रत्येक नागरिक की उन्नति एवं विकास के लिए बिना किसी भेदभाव (जातपांत, स्त्री–पुरुष, गरीब–अमीर एवं मत–सम्प्रदाय) के आधार पर पक्षपात रहित होकर यजमान की भूमिका निभानी चाहिए। यज्ञ केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं है बल्कि एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र को सुख एवं शांति प्राप्त करने की दिशा एवं प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित जनसमूह से अपील की कि हम अपने जीवन को यज्ञमय बनाते हुए समाज में परस्पर स्नेह, सहयोग एवं सहअस्तित्व की भावना को आगे बढ़ायें। अपने बच्चों को चरित्र, ईमानदारी, देशभक्ति एवं ईश्वरभक्ति के संस्कार देकर आदर्श नागरिक बनने का दायित्व निभायें। कार्यक्रम के पश्चात् श्री संजीव खोखर एवं अन्य गणमान्य महानुभावों ने स्वामी आर्यवेश जी का शॉल, श्रीफल आदि भेंट कर भव्य स्वागत किया।

वैदिक चिन्तन शिविर गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में
स्वामी आर्यवेश जी द्वारा प्रस्तुत किये गये विचारोत्तेजक सुझाव

गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में आयोजित चिन्तन शिविर के अवसर पर अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज को प्रगति पथ पर अग्रसर करने तथा उसे जन साधारण के लिए उपयोगी बनाने हेतु कई योजनायें प्रस्तुत की जिसका सभी उपस्थित बुद्धिजीवियों तथा आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों ने भरपूर समर्थन किया। उन्होंने कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता आर्य समाज को जनोपयोगी बनाने की है। आर्य समाज केवल यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग तक ही सीमित न रहे अपितु वहाँ पर विभिन्न प्रकार की समाजोपयोगी गतिविधियाँ निरन्तर चलती रहनी चाहिए। वर्तमान समय में समाज की जो ज्वलन्त समस्यायें हैं यथा नशाखोरी, जातिवाद, गौहत्या, कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड आदि पर चिन्तन आर्य समाज मंदिरों में जन सहयोग से किया जाये। स्वामी जी ने कहा कि हम सब मिलकर योजनाबद्ध कार्यक्रम बनायें और उसे पूरे देश में एक साथ क्रियान्वित किया जाना चाहिए। आम जनता को जोड़ने का यह एक विशेष माध्यम हो सकता है। स्वामी जी ने सारे देश की आर्य समाजों के तथा उससे सम्बन्धित अन्य संस्थाओं के अधिकारियों तथा समस्त राष्ट्रभक्त महानुभावों से अपील करते हुए कहा कि हम सब सामूहिक रूप से उन समस्त सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर आन्दोलित हों जिन्हें लेकर एक आम आदमी चिन्तित है, सम्वेदनशील है तथा कुछ करने के लिए बेताब है। सारे देश में जन–जागरण अभियान चलाये जायें तथा अन्य संस्थाओं का भी सहयोग लिया जाये। उन्होंने कहा कि आप सबका सहयोग अपेक्षित है।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज कार्य तो बहुत कर रहा है लेकिन उसको मीडिया का साथ नहीं प्राप्त हो रहा है। आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप को प्रकट करने के लिए मीडिया का सहयोग लेना अत्यन्त आवश्यक है। हम जो भी कार्यक्रम करें उसे इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा पत्र–पत्रिकाओं में अवश्य लिख कर भेजें जब हमारे द्वारा किये जा रहे कार्य आम जनता तक पहुँचेंगे तो निश्चय ही हमारी शक्ति बढ़ेगी। स्वामी जी ने कहा योजनाबद्ध ढंग से सामूहिक रूप से कार्य करके हम अपना बहुआयामी स्वरूप जनता के सामने ला सकते हैं इससे न केवल आर्य समाज को पहचान मिलेगी अपितु इससे सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय क्षेत्र में हम अग्रणी बनकर कार्य भी कर सकेंगे और महर्षि के स्वप्नों को साकार कर पायेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने चिन्तन शिविर को सम्बोधित करते हुए सुझाव दिया कि यदि हम आर्य समाज को पुनः एक तेजस्वी संगठन एवं वैचारिक आन्दोलन का स्वरूप प्रदान करना चाहते हैं तो अपनी कार्यशैली में परिवर्तन करना होगा और आर्य समाज को आर्य समाज मंदिरों से निकालकर आम जनता के बीच ले जाना होगा। आम जनता के बीच ले जाने से मेरा तात्पर्य यह है कि जिन ज्वलन्त समस्याओं से पूरी मानवता एवं विशेषकर भारत के लोग जूझ रहे हैं, त्रस्त हैं और उनकी स्थिति किंकर्त्तव्यविमूढ़ सी बनी हुई है। ऐसी स्थिति में हमें आर्य समाज के माध्यम से उक्त ज्वलन्त समस्याओं के समाधान का रास्ता प्रस्तुत करना चाहिए और राज शक्ति के मुकाबले मजबूत लोकशक्ति खड़ी करके देश की जनता का नेतृत्व करना चाहिए। अपनी इस बात की पुष्टि करने के लिए स्वामी जी ने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन का उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया कि जैसे आर्य समाज की भट्टी से निकले देशभक्त शहीदों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान अपने बलिदान तथा शहादत से आर्य समाज का नाम स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में लिखाया और कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष को भी आर्य समाज के इस योगदान की मुक्त कंठ से प्रशंसा करनी पड़ी। स्वामी आर्यवेश जी ने एक अन्य सुझाव प्रस्तुत करते हुए वैदिक विद्वानों से आग्रह किया कि वे निकट भविष्य में प्रमुख विद्वान मनीषियों की एक बैठक बुलाकर विभिन्न ज्वलन्त मुद्दों व राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं एवं अनेक विवादित घटनाओं के सम्बन्ध में आर्य समाज का दृष्टिकोण निर्धारित करें ताकि समय–समय पर उठने वाली विवादित बातों पर आर्य समाज का स्पष्ट एवं सर्व सम्मत मन्तव्य प्रकट किया जा सके।

स्वामी आर्यवेश जी ने यद्यपि यह स्पष्ट किया कि समस्याओं के समाधान के लिए सबसे सशक्त माध्यम राजनैतिक ताकत है और यह आर्य समाज की भूल रही है कि प्रारम्भ से राजनैतिक विषय के प्रति आर्य समाज उदासीन रहा है। व्यक्तिगत स्तर पर भले ही आर्य नेता विभिन्न पार्टियों के माध्यम से विधानसभा या संसद में एम.एल.ए. या सांसद बनकर चले गये किन्तु वे आर्य समाज के बजाय उस पार्टी के अनुशासन एवं उसकी नीतियों से बंधकर रह गये। आर्य समाज को उनका विशेष लाभ नहीं हो पाया। 1970 के आस–पास पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी एवं उनके साथियों ने आर्य सभा नाम से एक राजनैतिक पार्टी खड़ी करके आर्य समाज को एक राजनैतिक मंच देने का अभिनव प्रयास किया था किन्तु न तो उसे आर्य समाज का ही पूरा समर्थन मिला और न ही 1975 में राजनैतिक परिवर्तन में आर्य सभा अपना अस्तित्व कायम रख पाई। विदित हो कि 1975 की आपातकाल के बाद बनी जनता पार्टी में देश के प्रमुख राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दल विलीन हो गये थे, आर्य सभा भी विलय होने वाली पार्टियों में एक थी। आज हम यह अनुभव करते हैं कि यदि आर्य समाज की आर्य सभा या अन्य किसी नाम से ऐसी राजनैतिक पार्टी होती जिसके माध्यम से हम देश की जनता के सामने अपना वैदिक विचार एवं वैदिक समाजवाद प्रस्तुत कर सकते तो एक अलग ही स्थिति हमें देखने को मिलती। स्वामी जी ने आगे कहा कि हमें निराश होने की कतई जरूरत नहीं है। वर्तमान परिस्थितियों में हमें देश की जनता को मुद्दों के आधार पर संगठित करके राजशक्ति पर अंकुश लगाने के लिए लोकशक्ति खड़ी करनी होगी। स्वामी जी ने युवा वर्ग को अधिक से अधिक संख्या में आर्य समाज का सदस्य बनाने का सुझाव भी दिया। आज देश के किसान आत्महत्यायें कर रहे हैं, कन्या भ्रूण हत्या के द्वारा माँ के गर्भ में ही बच्चियों की निर्मम हत्यायें होती हैं। दहेज की आग में प्रतिदिन हजारों युवतियों को जला दिया जाता है। टी.वी. चैनलों एवं सिनेमा के पर्दों पर प्रस्तुत की जाने वाली फिल्मों, अश्लील विज्ञापनों एवं पाखण्ड, अन्धविश्वास, अश्लीलता, चोरी, अपहरण, बलात्कार, हिंसा एवं नैतिक मूल्यों पर किसी न किसी रूप में चोट करने वाली फिल्में देश के युवाओं एवं बच्चों को नैतिक पतन की तरफ धकेल रही है। उन्हें कुसंस्कारित कर रही हैं और भोगवादी संस्कृति की ओर आकृष्ट कर रही हैं। इनके विरुद्ध आर्य समाज को देश की जनता की आवाज बनकर राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलाना चाहिए ताकि देश के लोग आर्य समाज के सही स्वरूप तथा चरित्र को समझ सकें।

वैदिक चिन्तन शिविर में लिए गये महत्त्वपूर्ण निर्णय

योजनाबद्ध कार्यक्रमों के द्वारा देश की ज्वलन्त समस्याओं को सुलझाया जायेगा

आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानों, समाज सेवियों तथा वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का हुआ समागम

आर्य जगत् के सभी विद्वानों, उपदेशकों, प्रचारकों व कार्यकर्ताओं व सदस्यों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दिनांक 18–19 जून 2016 को दो दिवसीय वैदिक चिन्तन शिविर गुरुकुल गौतमनगर में आदरणीय स्वामी प्रणवानन्द जी के मार्गदर्शन में तथा स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी के सानिध्य में आयोजित किया गया था। इस शिविर में आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री, पं. वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, पं. सोमदेव जी शास्त्री (मुम्बई), डॉ. धर्मेन्द्र जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, डॉ. वाचस्पति कुलवन्त जी, श्री विद्यामित्र जी ठुकराल, श्री रविदेव गुप्ता जी तथा कैप्टेन रुद्रसेन जी, पं.धर्मवीर जी शास्त्री, श्री वीरपाल, डॉ.रघुवीर वेदालंकार, डॉ.महेश विद्यालंकार,आचार्य हरिदत्त उपाध्याय, श्री सुबोध कुमार, आचार्य हनुमत् प्रसाद, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, ओम्प्रकाश यजुर्वेदी, श्रीमती गीता झा, आचार्या कल्पना, आचार्य श्यामलाल, श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री वासुदेव व्रती, श्री अजीत कुमार, श्री रवीन्द्र कुमार आदि समाजसेवी–युवा विद्वान एवं विदुषियों ने भाग लिया।

इस चिन्तन शिविर का मुख्य उद्देश्य यह था कि आर्यसमाज की वैदिक विचारा धारा को कैसे जन–जन तक पहुँचाया जाये? प्रचार का क्या तरीका अपनाया जाये? युवाओं को कैसे समाज के साथ जोड़ा जाये? उपदेशक, पुरोहित व प्रचारक कैसे तैयार किये जायें। आर्यसमाज मन्दिरों को कैसे जीवन्त बनाया जाये जिससे वहाँ 24 घंटे सामाजिक व धार्मिक गतिविधियाँ चलती रहें।

चिन्तन शिविर में विभिन्न विद्वानों के विचारों को दृष्टिगत यह निर्णय लिया गया है कि वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार की दिशा व दशा में परिवर्तन लाने हेतु धर्म परिषद् का गठन किया जाये। इस परिषद् का कार्य होगा कि व्यक्तिगत रूप में अलग–अलग उपदेशकों, प्रचारकों व विद्वानों द्वारा किये जा रहे प्रचार कार्यों को संगठित रूप में अल्पकालीन व दीर्घकालीन कार्ययोजना तैयार कर किया जावे तथा विभिन्न भाषाओं में (देशी–विदेशी) प्रचारक तथा साहित्य भी तैयार किया जावे। यह प्रचार कार्य अधिक से अधिक युवाओं, बुद्धिजीवियों तथा आम जनता को अपने साथ जोड़ने के उद्देश्य से किया जायेगा। प्रचार कार्य में नयी तकनीक टी.वी., रेडियो, सोशल मीडिया, कम्प्यूटर आदि का भरपूर उपयोग किया जायेगा तथा देश–काल व परिस्थिति के अनुसार प्रचार की पद्धति निर्धारित होगी।

इसी प्रकार गुरुकुलों, आर्य स्कूलों व डी.ए.वी. शिक्षा संस्थानों की पाठविधियों में समयानुकूल परिवर्तन–परिवर्धन करने, विषयानुकूल पुस्तकों का लेखन करने, आर्यसमाज से सम्बन्धित विषयों पर शोध कार्य करने, भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन करने तथा विभिन्न क्षेत्रों विशेषकर उत्तरपूर्वी व जम्मू–काश्मीर आदि प्रदेशों की विभिन्न भाषाओं बोलियों व संस्कृति का भारतीय संस्कृति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने हेतु विद्वत् परिषद् के गठन का निर्णय लिया गया।

आजकल विभिन्न समाचार पत्रों व टी.वी. चैनलों पर आर्यसमाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध अनेक टिप्पणियाँ व समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। जिसका प्रतिवाद आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा नहीं किया जाता है। वस्तुतः मीडिया से हम लोग एक दम दूर हो गए है।

इसी प्रकार बहुत सी घटनायें होती हैं। सभी राजनैतिक दल व धार्मिक संगठन अपनी प्रतिक्रियायें देते हैं तथा आन्दोलन करते हैं, परन्तु आर्यसमाज की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है। इन कार्यों को करने के लिये जन–जागरण परिषद् के गठन का निर्णय लिया गया।

देश की युवा शक्ति को संगठिन करने, उन्हें अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बोध कराने, आपातग्रस्त लोगों की सहायता करने, सामाजिक बुराईयों को दूर करने, नशा व ड्रग्स के विरुद्ध अभियान चलाने, चरित्र निमार्ण करने, साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने, स्वच्छता का अभियान चलाने, छोटे बच्चों–बच्चियों को शिक्षा हेतु स्कूल भेजने के लिये प्रेरित करने, देश भक्त महापुरुषों की जीवनगाथा का प्रचार–प्रसार करने हेतु समन्वय समिति नाम से एक संगठन स्थापित करने का निश्चय किया गया है।

इसके अन्तर्गत हर 2000 की आबादी पर कम से कम 10 नवयुवकों का एक संगठन बनाया जायेगा। ये 10 नवयुवक सुबह या शाम 1 घंटे के लिये किसी सार्वजनिक स्थान पर तिरंगे झंडे के साथ एकत्रित होकर हल्का व्यायाम, आसन–प्राणायाम तथा कुछ सामूहिक खेल आदि करेंगे। इस कार्यक्रम की शुरुआत 'जन–गण–मन' राष्ट्रगान से होगी तथा समापन 'वन्देमातरम्' राष्ट्रीय गीत से होगा। इस दौरान देशभक्ति के गीत गाये जा सकेंगे तथा विभिन्न सामयिक विषयों पर चर्चा होगी तथा सामाजिक समस्याओं, देशभक्त महापुरुषों के बारे में बताया जायेगा। सप्ताह में एक या दो दिन अपने–अपने क्षेत्र मे प्रभात फेरी निकाली जायेगी तथा कभी–कभी स्वच्छता का अभियान चलाया जायेगा। इस प्रकार हर गांव व शहर में 2000 की आबादी के मोहल्लों में कम से कम 10 नवयुवकों का एक संगठन पूरे देश में तैयार किया जायेगा। इस कार्य के लिये एक संयोजक तथा एक सहसंयोजक होगा। संयोजक का कार्य दश नवयुवकों की पहचान करना तथा ऊपर बताये तरीके से प्रशिक्षण देना होगा। सह संयोजक का कार्य संयोजक को अनुपस्थिति में गतिविधियों को संचालित करना तथा अन्य समय में संयोजक को सहयोग करना होगा।

इस प्रकार के चयनित युवकों में से उत्साही एवं प्रबुद्ध युवकों को बौद्धिक शिविरों में प्रशिक्षण के लिये भेजा जायेगा तथा उनका उपयोग संगठन के प्रचार कार्य के लिये किया जायेगा। संयोजक तथा सहसंयोजक का चयन राष्ट्रीय अथवा प्रान्तीय समिति द्वारा किया जायेगा।

इस संगठन में वे सभी युवक भाग ले सकेंगे जो देश व समाज की उन्नति के लिये कुछ सेवा कार्य करना चाहने हैं तथा प्रतिदिन एक घंटे का समय दान करने को तैयार हो।

युवकों के साथ–साथ छोटे बच्चों को भी एकत्रित किया जा सकेगा तथा उन्हें मनोरंजक खेल तथा सामान्य शिष्टाचार की बातें भी सिखायी जायेंगी, साथ ही देश भक्ति के गीत भी सिखायें जायेंगे।

इसी प्रकार का कार्यक्रम बच्चियों के लिये भी किया जा सकता है, बशर्ते उनके लिये कोई प्रशिक्षित महिलाऐं उपलब्ध हों। सार्वजनिक पार्क उपलब्ध न हों तो किसी पूर्व निर्धारित स्थान पर इस प्रकार का कार्यक्रम किया जा सकता है।

यह प्रयास केवल आर्यसमाज का प्रसार–प्रसार करने के उद्देश्य से किया गया है, किसी का विरोध करने के लिये नहीं। वर्तमान में अनेक सार्वदेशिक सभायें तथा प्रतिनिधि सभायें कार्य कररही हैं तथा आर्यसमाज विभिन्न ग्रुपों में बंटा हुआ है। हम किसी ग्रुप के साथ न बंधकर सभी सभाओं को उनके रचनात्मक कार्यों में सहयोग देना चाहते हैं तथा आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार की कार्ययोजना में उनका सहयोग लेना चाहतें है।

इन दो दिनों के चिन्तन शिविर का संचालन डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) एवं डॉ. धर्मेन्द्र कुमार द्वारा किया गया।

अग्निलोक आश्रम, ग्राम खेड़ला जिला–गुड़गांव में आर्य युवा निर्माण शिविर सम्पन्न

गत 13 जून से 19 जून तक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायामाचार्य स्वामी विजयवेश जी के संयोजन में आर्य युवा निर्माण शिविर अग्निलोक आश्रम खेड़ला, जिला–गुड़गांव में आयोजित किया गया। इस शिविर की सम्पूर्ण व्यवस्था स्वामी विजयवेश जी ने की। श्री गुलाब सिंह आर्य तथा गंगाशरण आर्य ने व्यायाम शिक्षक के रूप में शिविरार्थियों को शारीरिक प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविर में

समय–समय पर अनेक विद्वानों ने पहुँचकर शिविरार्थियों को बौद्धिक ज्ञान कराया। इस क्रम में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी, श्री कन्हैया लाल जी आर्य गुड़गांव कोषाध्यक्ष हरियाणा सभा, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह, श्री सुभाष चन्द्र दुआ आदि प्रमुख थे। शिविर समापन के अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी मुख्य रूप से पधारे थे।

शिविर में अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने युवकों को यम–नियम का पाठ पढ़ाया और उनसे कहा कि जीवन में अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यम और नियम का पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुनिया के अन्य लोगों के प्रति व्यक्ति का व्यवहार कैसा होना चाहिए यह यम में बतलाया गया है। यम पांच हैं– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। इसी प्रकार अपने लिए किये जाने वाले व्यवहार को नियम में दर्शाया गया है। नियम भी पांच होते हैं – शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान। इस प्रकार यदि प्रत्येक व्यक्ति यम और नियम का पालन करके समाज में ईर्ष्या, द्वेष, लोभ–लालच, पक्षपात एवं संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर प्रत्येक मनुष्य एवं अन्य प्राणियों के प्रति स्नेह, संवेदना एवं सहयोग का भाव रखेगा तो निश्चय ही वह व्यक्ति यश एवं कीर्ति को प्राप्त करेगा। स्वामी जी ने युवकों को प्रेरित किया कि वे शिविर में सिखाई गई बातों को अपने जीवन में धारण करे तथा अन्य युवकों को भी अपने साथ लेकर संगठित करे। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी विजयवेश जी की प्रशस्ति में अपने उद्गार व्यक्त किये।

सात दिवसीय प्रान्तीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न
पंजाब जैसा दुःखद जानलेवा सांस्कृतिक प्रदूषण ऐसे चरित्र निर्माण शिविरों से ही मिटगा – सतीश पूनियां

जयपुर 26 जून, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद एवम् आर्य समाज जयपुर दक्षिण द्वारा पिछले सात दिन से चल रहा प्रान्तीय आर्य युवक चरित्र निर्माण एवम् व्यक्तित्व विकास शिविर संस्कार भवन, जी0 एल0 सैनी नर्सिंग कॉलेज मुहाना मण्ड़ी, रामपुरा रोड़, पर सम्पन्न हुआ।

शिविराध्यक्ष एवम् परिषद् प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने बताया कि यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त भव्य व्यायाम, सूर्य नमस्कार, ध्यान, प्राणायाम, जूडो कराते, आसन, लाठी संचालन का भव्य प्रदर्शन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सतीश पूनियां ने आर्य समाज व दयानन्द व वेदों का गुणगान किया। उन्होंने कहा कि पंजाब जैसा नशे में डूबा युवाओं का जानलेवा सांस्कृतिक प्रदूषण ऐसे ही चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से रूकेगा। नगर निगम लाइसेंस समिति चैयरमैन विष्णु शर्मा (लाटा) ने यज्ञ व योग को पीढ़ी के संस्कार सुधारने के लिए आवश्यक बताया। समारोह संयोजक डा. प्रमोद पाल एवम् सुनील अरोड़ा ने सभी अतिथियों को भगवा पट्टा व स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान किया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता एवम् अनुशासन सहित विशेष प्रस्तुति देने वाले शिविरार्थियों को पारितोषिक एवम् साहित्य वितरण किये गये। भजनोपदेशक पंडित भूपेन्द्र एवम् लेखराज शर्मा, अभिप्रेरणा करते हुये भजनोपदेश दिये। जिंद हरियाणा से आये योगाचार्य विजेन्द्र, मनोज शास्त्री, विमल आर्य व ओमप्रकाश निर्वाण ने सात दिन तक व्यस्त दिन चर्या के साथ प्रशिक्षण दिया।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली से महामंत्री सुशील आचार्य उषुर्बूद्ध, जी0 एल0 बधवा, पंडित यादराम, हरिचरण सिंघल, सहित सैकडों आर्य समाजी महिला, पुरूष मौजूद रहे।

समारोह के समापन पर स्वागत अध्यक्ष डी0 के0 गुप्ता एवम् स्वागत समिति के सचिव कॉलेज निर्देशक दीपांकर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

'''Social Media '''पर ''''आर्य समाज '''' की नई पहल

नमस्ते आर्यजन

2 मिनट 'मिशन आर्यावर्त' के लिए जरूर दें।

आर्यजन हमने मिशन आर्यावर्त के whats app न्यूज बुलेटिन को शुरू किया है। जिसका बहुत सुंदर परिणाम मिला।अब तक लगभग 40 हजार whats app नंबर पर हर सप्ताह हम इसको शेयर करते हैं। इसके माध्यम से हम देश दुनिया में आर्य समाज के सकारात्मक स्वरूप को ले जाना चाहते हैं। आज आर्य समाज कार्य तो बहुत कर रहा है परन्तु उसको सामूहिक रूप से प्रसारित नहीं कर पा रहा। इस बुलेटिन के माध्यम से हम सम्पूर्ण आर्य जगत की गतिविधियों को शामिल करके आप लोगों तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। अभी इस बुलेटिन को सप्ताह में सिर्फ एक दिन प्रचारित व प्रसारित करने का विचार है वो भी रविवार को। इससे जुड़ने के लिए आपको दो कार्य करने है :–

(1) आपको अपना whats app नम्बर अपने नाम व स्थान के साथ लिख कर हमारे पास भेजना है। ताकि आपको निरंतर बुलेटिन मिलता रहे।

(2) आपको अपना समाचार फोटो के साथ व संक्षिप्त जानकारी के साथ हमारे whats app नम्बर पर भेजना है। ताकि हम उसको whats app बुलेटिन में शामिल कर सकें। इनको आप ग्रुप में पोस्ट न करके सीधे हमारे whats app पर पोस्ट करेंगे।

'''कुछ समय के बाद हम इसका वीडियो version भी तैयार करेंगे।

''''हमारा दूसरा कार्यक्रम'''

आर्य विचार मंथन

मेरे सात सवाल जिसमे लगभग 15 मिनट का किसी एक आर्य संन्यासी,नेता व विद्वान का साक्षात्कार होगा। जिसमे आर्य समाज के विषय पर उनके विचार लिए जायेंगें।

प्रतिदिन वेद, रामायण ,महाभारत, योग, चाणक्य, हितोपदेश आदि पर सुविचार भी आप तक भेजे जायेंगे। हमारा whats app नम्बर 9354840454 है। आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं। आपसे निवेदन है के आप इस सन्देश को ज्यादा से ज्यादा साथियों तक प्रचारित व प्रसारित करें ताकि मिशन आर्यावर्त के संकल्प को मजबूती मिल सके। यदि आप मिशन आर्यावर्त का हिस्सा बनना चाहते हैं हमारे साथ कार्य करना चाहते हैं तो भी आप सम्पर्क जरूर करें।

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

आर्यन महिला अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज क्षेत्र में जो महिलाएँ, संन्यासनी, उपदेशिका, भजनोपदेशिका के रूप में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं अथवा जो कन्या गुरुकुलों में आचार्या हैं अथवा अध्यापन का कार्य कर रही हैं अथवा किसी भी रूप में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण, कार्य क्षेत्र, आयु, शिक्षा आदि लिखकर भेजें।

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
ए–41, लाजपत नगर, द्वितीय, (निकट मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली–24
दूरभाष – 011–45791152, 29842527, 9599107207

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

8 POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 1–2 जुलाई, 2016
प्रकाशन की तिथि : 30 जून, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
30 जून से 6 जुलाई, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

दैव्य जन और मनुष्य जन

यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः।।

—ऋ० ७/८६/५; अथर्व० ६/५१/३

ऋषिः—वसिष्ठः।। देवता—वरुणः।। छन्दः—पादनिचृज्जगती।।

विनय—हे वरुण! तुम जन हो तो दैव्य जन हो—पर हम गिरते—पड़ते उठने का यत्न करने वाले जन हैं। हे देव! हम मनुष्यों पर दया करो, हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। हम बेशक तुम्हारा द्रोह करने वाले बड़े भारी अपराधी होते रहते हैं। तुम्हारे धर्मों का लोप करना सचमुच बड़ा द्रोह है। जो कुछ हमें मिल रहा है वह सब—कुछ तुम्हीं से मिल रहा है और वह सब इसीलिए मिल रहा है, क्योंकि तुम्हारे धर्म सत्य हैं, अखण्ड हैं। यदि तुम्हारे धर्म कभी खण्डित हो सकें तो तुम तुम न रहो, परन्तु इन्हीं तुम्हारे सत्यधर्मों को (जिनके कारण हमें यह सब—कुछ मिल रहा है) हम लोग अपने व्यवहार में लोप कर देते हैं। यह कितना द्रोह है? ये तुम्हारे सनातनधर्म हमारे व्यवहार में धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय आदि रूपों में प्रकट होते हैं, परन्तु हम इनका परिपालन न कर तुम सर्वदाता प्रभु के द्रोही होते रहते हैं। फिर भी हे देव! हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमें सहन करो, हमें कठोर दण्ड देकर हमारा नाश मत करो। क्योंकि यह सब धर्मभंग हम जान—बूझकर नहीं करते। जो कुछ हमसे धर्म— लोप होता है वह अज्ञान से, प्रमाद से, असावधानी से होता है। अब हम कभी जान—बूझकर अधर्माचरण में नहीं प्रवृत्त होते, पर ये अज्ञान की, असावधानी की भूलें होते रहना तो हम मनुष्यों के लिए अस्वाभाविक नहीं है। इसलिए हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। वरुण राजन्! हम जानते हैं कि राजद्रोह बड़ा भारी अपराध है। तुम्हारे सच्चे, पूर्ण कल्याणमय राज्य का द्रोह करना आत्मघात करना है। अतएव अब हम अपनी शक्ति—भर और जान—बूझकर तुम परम प्यारे का द्रोह कैसे कर सकते हैं? परन्तु तुम भी हमारे अज्ञान से किये अपराधों को क्षमा करो, किन्तु नहीं, तुमसे हम क्षमा के लिए क्यों कहें? तुम तो हमारा विनाश कर ही नहीं सकते। तुम जो भी कुछ करोगे हमारा कल्याण ही करोगे— यह निश्चित है। फिर तुमसे प्रार्थना तो इसलिए है कि इस द्वारा हम तुम्हारे कुछ और अधिक निकट हो जाएँ, हमारा हृदय शुद्ध हो जाए, क्योंकि तुम्हारे आगे रो लेने से हृदय की शुद्धि हो जाती है और भविष्य के लिए धर्म—भंग होने की सम्भावना और—और कम होती जाती है।

शब्दार्थ—**वरुण**=हे वरुण **मनुष्याः**=हम मनुष्य **दैव्ये जने**=तुझ दिव्य जन में **इदं यत् किंच अभिद्रोहम्**=यह जो कुछ द्रोह **चरामसि**=किया करते हैं। और **अचित्तीः**=अज्ञान और असावधानता से **यत् तव धर्माः युयोपिम**=जो तेरे धर्मों का लोप किया करते हैं **देव**=हे देव **तस्मात् एनसः**=उस पाप के कारण **नः मा रीरिषः**=हमारा नाश मत करो।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई—मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

आर्य समाज का उ. प्र. में शराबबंदी के विरूद्ध जन—जागरण अभियान

शराब एक अभिशाप है, इसे पीने वाला ही नहीं उसका परिवार भी बर्बाद होता है।

— देवेन्द्रपाल वर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना इसलिए की थी कि इस देश के लोग धार्मिक आडम्बरों, अन्धविश्वास आदि तथा सामाजिक अभिशापों, बाल—विवाह, सती प्रथा, छुआ—छूत, स्त्री शिक्षा, मद्यपान आदि एवं देश की स्वतंत्रता में सक्रिय भागीदारी लेकर इन बुराईयों को छोड़कर वैदिक मार्ग पर चलते हुए इस देश की उन्नति एवं विकास में बराबर का सहयोग करें।

भारत की आजादी के समय महात्मा गांधी ने देश के लोगों को विश्वास दिलाया था कि भारत की आजादी के बाद तुरन्त इस देश में पूर्ण मद्य निषेध लागू होगा। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी अभी तक हम इस अभिशाप से मुक्त नहीं हो सके। शराब व्यक्ति के स्वास्थ्य के साथ—साथ अपराधों में वृद्धि तथा परिवार को बर्बादी के कगार पर लाकर खड़ा कर देती है। जितनी राजस्व की प्राप्ति सरकार को नहीं होती है उससे ज्यादा उसके उपचार, मुआवजा व रोक—थाम आदि में खर्च हो जाती है।

आर्य समाज का जन्म ही इन सामाजिक रोगों के उपचारक के रूप में हुआ था। वह इन सुधारों का सदैव अग्रणी रहा है। उत्तर प्रदेश में पूर्ण शराबबंदी अभियान के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. गॉव, कस्बा, ब्लाक, तहसील, जनपद एवं प्रदेश स्तर पर शीघ्र ही जन—जागरण अभियान आरम्भ करने जा रही है। जिसकी रूप—रेखा शीघ्र प्रस्तुत की जाएगी। इस सम्बन्ध में मा. मुख्यमन्त्री एवं महामहिम राज्यपाल महोदय को प्रदेश की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से ज्ञापन भेजा जाएगा। इस अभियान में जो भी लोग भाग लेना या सहयोग प्रदान करना चाहें उनका आर्य समाज की ओर से स्वागत है।

(देवेन्द्रपाल वर्मा), सभा प्रधान
मो0—09412678571

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।